# GYAN BHARTI
# COLLEGE OF EDUCATION

**Indri (Karnal)**

**KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA**

**B.Ed (          )**

# EPC- 2

Drama & Art in Education

**Name :**________________________

**University Roll No.**________________________

**Subject :**________________________

**Code :**________________________

**Submitted By,** **Submitted To,**

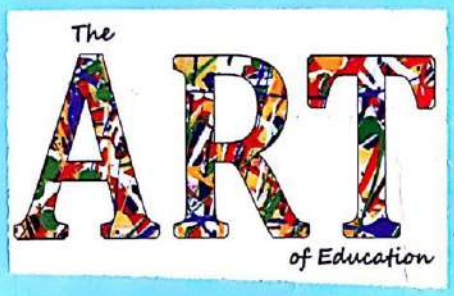

## Meaning and concept of 'Art'

कला एक ऐसा विषय है। जिसमें विभिन्न क्रियाओ व गतिविधियों के माध्यम से छात्रो के सर्वांगीण विकास के सहायता मिलती है। कला का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है व कला शिक्षण का उद्देश्य केवल छात्रों अत्यंत का संज्ञानात्मक विकास ही नहीं अपीतु क्रियात्मक विकास व्यवहारगत परिवर्तनों को लाते हुए छात्रो को आत्मनिर्भर व जीवन जीने की कला सिखाना है।

कला शिक्षण के माध्यम से छात्रों मे विचारो भावों, अनुभवो, धारणाओ प्रतिक्रियाओ संवेदनाओ संवेगो व क्रियाओ की स्वच्छन्द रूप से आत्म अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए अवसर प्रदान किए जाते है।

यह एक ऐसा विषय है जो छात्रों के जीवन मे से नीरसता को दूर कर कल्पनाओ के रंग भरता है।

छात्रो को सृजनात्मकता व नवीनता को अपनाते के लिए प्रेरित करता है तथा उनमे व समझ विकसित करते हुए प्रत्येक कार्य को पूर्ण लगन व मेहनत से करने मे सहायक होते है।

## शिक्षा और कला मे संबध :-

### कला शिक्षा का अर्थ :-

कला तथा शिक्षा मे गहरा संबंध है क्योंकि कला शिक्षा का एक माध्यम साधन है। मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने मे शिक्षा का गहरा योगदान है। मानवीय जीवन के तीन पक्ष है।

I. ज्ञानात्मक

II. भावात्मक

III. क्रियात्मक

* कला शिक्षा का अर्थ

सुन्दरता और मधुरता लाने वाली वस्तु को कला कहा जाता है। कला का मानवीय जीवन की आवश्यकता भी है। और अभिव्यक्ति भी। हर देश कला तथा संस्कृति का व्यक्ति की आधार भूत आवश्यकताओ के साथ गहरा नाता रहा है। वास्तव मे कला ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भावो की अभिव्यक्ति करता है। आदिकाल से ही कला मनुष्य की भावनाओ आवश्यकताओं की पूर्ति करती आई है। इसलिए कला शिक्षा मानवीय जीवन का अनिवार्य अंग बन गई है।

हमारे विचार से काव्य मे कला का मूल लक्ष्य सौन्दर्य ही होना चाहिए, किंतु उसमे अनैतिक तत्वों का ऐसा मिश्रण न हो कि यह समाज को क्षति पहुँचाने लगे। हाँ उसमे कलात्मकता को ठेस पहुचाए बिना किसी उपयोगी तत्व का उसका समावेश किया जा सके तो वह उसका विशिष्ट गुण होगा।

जिस प्रकार सृष्टि मे प्रातः काल तथा सांयकाल होती है, ठीक उसी प्रकार से कला के क्षेत्र मे भी तैयार करता है।

चित्रांकन, नृत्य, नाटक, एकांकी शिल्पकारी, रेखाचित्र रंग करना आदि इनमे से किसी भी रूप द्वारा अपनी भावनाओ को व्यक्त करना कल कहलाता है।

यह एक ऐसा माध्यम है जो सभी सीमाओ व बंधनो से मुक्त है। किसी न किसी उददेश्य को प्राप्त करने के लिए इसे अपनाया जाता है। यह लोक पाश्चात्य शास्त्रीय नवीन प्राचीन सभी बच्चो को अपने मे सामाए है। तथा इसके द्वारा प्रत्येक छात्र की जरूरतो को पूरा किया जा सकता है।

कला एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा छात्रो को अपनी जिज्ञसा, भावनाओ, आदि को संतुष्ट व विकसित करने के भरपूर अवसर प्राप्त होते है। इसके माध्यम से वह अपने समय का उचित रूप से प्रयोग कर सकते है। यह कोई अलग-अलग विषय नही है।

## कला - की प्रकृति

(1) कला शिक्षण द्वारा छात्रों को अपने अन्य विषयो के अध्ययन मे अर्जित सद्धान्तिक ज्ञान को व्यावहारिक पृष्ठभूमि के अवसर मिलते है।

(2) यह एक सतत् व विस्तृत प्रक्रिया है। इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है, तथा हर पल इसमे कुछ न कुछ नया जुड़ता रहता है।

(3) इसमे उन सभी अनुभवो का समन्वय होता है। जिनसे कुछ न कुछ सीखने को मिले। फिर चाहे वह अनुभव अच्छे या बुरे हो।

(4) यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, इसमे प्रत्येक के लिए कुछ न कुछ है।

(5) यह ज्ञानात्मक व व्यवहारात्मक अन्य कौशलो व सिद्धांतो को विकसित करने मे सहायक है।

(6) यह हमारी कल्पना शक्ति को विकसित करती है।

University Roll No. .....  Page No:.....

# कला का महत्व

कला हमारे भावो को गति प्रदान करती है। कला हमारी भावनाओ की अभिव्यक्ति का सरल साधन है यह बच्चो मे सृजनात्मक की भावना को जन्म देती है।

बच्चो लगन व ईमानदारी से काम करना सीखते है। कला हमारी उन्नति का आधार है।
यह आत्मलोचना व आत्मनिरीक्षण मे मदद करती है, प्रचार की दुनिया मे दिन-प्रतिदिन इसका महत्व अधिक जा रहा है।

यह संगठन की भावना को पैदा करती है। यह योजनाएँ बनाने मे सहायता कर रही है। यह हमारी कल्पना शक्तियो को विकसित करती है।
अतः कला का हमारे दैनिक जीवन मे अपना ही महत्व है।

(I) मनुष्य के मन मे सौन्दर्य अनुभूति को विकसित करती है। जिससे कला के प्रति आकर्षण पैदा होती है। सुन्दरता मन मे स्थिर रहती है, और शांतिदायक होती है।

I. रचनात्मक शक्ति का विकास:-
ललित कलाओ के माध्यम से हम बच्चों मे रचनात्मक शक्ति का विकास कर सकते है। क्योकि बच्चो का ध्यान रचनात्मक कार्यो की ओर अधिक होती है। कला की माध्यम

से बच्चे सृजनात्मक का परिचय देते हैं।

II. कला के माध्यम से औद्योगिक विकास :-

कला के माध्यम से हम अपके देश मे औद्योगिक विकास कर सकते हैं। इससे छोटी-छोटी इकाईयों तथा उद्योग धंधो के पनपने मे सहायता मिलती है, जैसे- रंग, ब्रश, पेपर, लकड़ी की आकृति का निर्माण आदि।

# Impoxtaint of Axt in Education

x———x———x———x

शिक्षा कला का अहम योगदान है

1) यह भावनात्मक अनुभूति को प्रकट करने का साधन है।
2) यह कल्पना शक्ति को विकसित करती है।
3) यह सृजनात्मक शक्ति का विकास करती है।
4) यह व्यक्तित्व की वृद्धि का साधन है।
5) यह चरित्र का निर्माण करती है।
6) यह आर्थिक विकास मे सहायक है।
7) यह सौन्दर्य अनुभूति को विकसित करना है।
8) यह सर्वव्यापी है।
9) यह प्राचीन काल के जीवन की जानकारी प्रदान करती है।
10) बालक को मन पर पड़ने वाले प्रभावो को सृजनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करना।

## कलाओ का महत्व

ललित कलाओ का मानव जीवन मे बहुत ही महत्व है। ये कलाएँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे काम आती है। ललित कला के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु निम्न

(1) सौंदर्य चेतना का विकास :-

ललित कलाएँ करने के जो अवसर उपलब्ध होते है। उनसे हाथ से काम करने की अच्छी आदत उसमे विकसित होती है। अब वह हाथ से कार्य करने से निम्न चीजे बना सकते है। जिसको बाजार मे बेचकर धन कमाया जा सकती है। जिससे निर्धनता की दर कम हो सकते है और इसलिए हस्त कार्य बहुत ही अच्छा कार्य है। हाथ से हम चित्रकला ड्राईग बना सकते है, और घर को सजाने के लिए रंगोली बना सकते है।

हस्तकला का अर्थ है कि अपने हाथो के द्वारा बनाई गई कला। हम अपने हाथ से किसी भी प्रकार की कला कर सकते है।

जैसे —

कढ़ाई, बुनाई, सिलाई, पेन्टर आदि। किसी भी डिजाईन की कला कर सकते है। इस प्रकार की कला को करके हम धन कमा सकते है।

ज्ञानात्मक, भावनात्मक, क्रियात्मक :-

कला इन तीनो पक्षों को विकसित करने मे मदद करती है। प्रकृति ने मानव को संवेदनशील बताया है। मानव मस्तिष्क आकृतियो के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है। टेढी-मेढ़ी रेखाओ के माध्यम से मानवीय बच्चे को टेढ़ा-मेढ़ा लिखना सिखाया जाता है रेखाओ के माध्यम से उसकी भावनाओ को विकसित किया जाता है। रेखाओ को बनाने वाले हाथो को क्रियाशील बनाया जाता है। अतः कला का अर्थ है- बच्चे के अस्तित्व का सम्पूर्ण विकास। आधुनिक समय मे कला जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका है।

University Roll No. .....

Page No:.....

# चित्रकला

## चित्रकला का परिभाषा :-

कला मानव की भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसलिए चित्रकला चित्रों के माध्यम से अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करना है। चित्रकला दो शब्दों में मिलकर बना है। चित्र + कला।

जिसका अर्थ होता है कि चित्र का ज्ञाता जो चित्रकला की परिभाषा के संदर्भ में कहा जा सकता है। कि मनुष्य जब अपने हृदय की भावनाओं को रेखाओं के द्वारा प्रकट करता है। तथा उसमें सुन्दरता की भी छाप हो तो उसे साधारण बोलचाल की भाषा में चित्रकला कहते हैं।

चित्रकला के माध्यम से हम अनेक प्रकार के चित्र बना सकते हैं। और हम उन चित्रों में सुन्दर-सुन्दर रंग भी भर सकते हैं। जिससे की हमारे चित्र सुन्दर दिखाई देते हैं। चित्रकला के माध्यम से हम पेंटिंग भी कर सकते हैं। हमारे जीवन में चित्रकला का भी बहुत महत्व होता है।

University Roll No. .....

Page No:.....

## ड्राईंग शब्द का अर्थ :-

ड्राईंग शब्द का अर्थ है 'खींचना' जब किसी चित्र की सही रूप मे कॉपी की जाती है। तो उसको हम साधारण बोलचाल मे ड्राईंग कहते है। इस प्रकार ड्राईंग की परिभाषा देने के लिए कहा जा सकता है।

नुकीले औजार के माध्यम से खींच हुआ या निर्माण किया हुआ कृत्य या कृति, ड्राईंग कहलाती है। इस प्रकार हम इसे outline या स्तर पर नकीले यंत्र से खींच देना कहते है।

इसमे पेन या पेंसिल का प्रयोग किया जा सकता है। किसी भी कार्य सतह के माध्यम से ड्राईंग की जा सकती है, ड्राईंग करते समय हमे निम्न चीजो की जरूरत होती है।

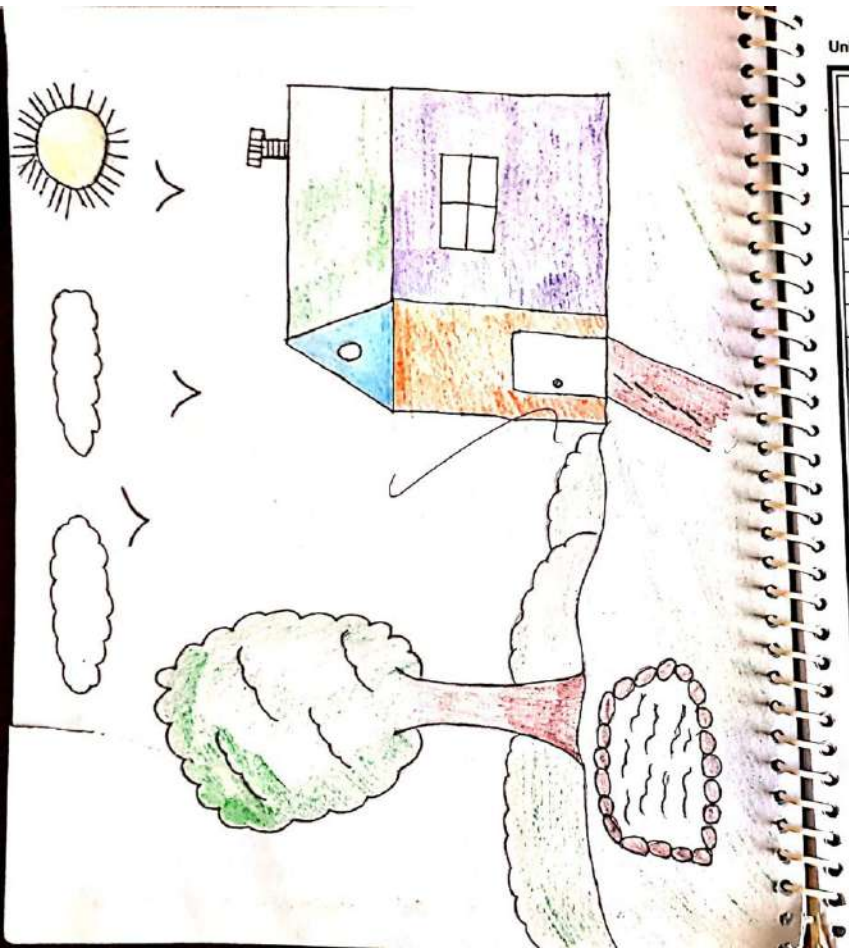

## कला का अन्य विषयों से संबंध :-

कला का अनेक विषयों की शिक्षा से गहरा संबंध है। या यूं कहिए कि मानव जितना पुराना है। कला भी उतना ही प्राचीन है। मनुष्य का समाज, देश विदेश सभी से देशों की कलाओं, शिक्षाओं से नाता स्वाभाविक ही जुड़ जाता है। उसी प्रकार कला का भी अन्य विषयों के साथ संबंध रहा है। लेकिन वर्तमान में कला शिक्षा जीवन का एक उपयोगी अंग बन गई है। कला जीवन की अभिव्यक्ति बन गई है।

## कला का इतिहास :-

कला का इतिहास से अटूट संबंध है। क्योंकि जैसी कला होगी वैसा ही इतिहास होगा। क्योंकि उस युग की घटनाएं वस्तुओं के चित्र समय-चार्ट-नक्शे मानव के रहन सहन के चित्रों में इतिहास स्वयं निवास करता है। इतिहास की घाटी में कक्षा में पढ़ने के लिए उसे जैसे प्रकार, पेंसिल रबड़ कटर इत्यादि चीजों की जरूरत होती है।

University Roll No. .....

Page No:.....

## कला तथा भूगोल का संबंध

भूगोल से सम्बन्धित जंगल, नदी-नाले पहाड़ व अनके प्रकार के द्वारा ही हो, जीव-जन्तु की जानकारी हमे कला के द्वारा ही होती है। क्योंकि भूगोल की जो स्थितियाँ होती है। उसके प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति का जाना व देखना असंभव होता है। कला के द्वारा हम घर बैठे ही उनका ज्ञान प्राप्त कर सकते है। अत: कला का भूगोल से गहरा संबंध रहा है।

## कला तथा विज्ञान का संबंध :-

विज्ञान से संबंधित अनेक प्रकार की खोजे चित्रो के माध्यम से ही मानव तक पहुँच पाती है। क्योंकि प्रत्येक मानव सभी जगह पर नही पहुँच पाता। इसलिए उसे चित्रो के द्वारा विज्ञान का ज्ञान आसानी से ही (जाती) जाता है।

## कला तथा अंक औसत :-

विभिन्न प्रकार की संख्याओं रेखाओ का ज्ञान कला के द्वारा ही संभव है। त्रिभुज वर्गाकार, गोलाकार, तथा अनके प्रकार की आकृति को समझाने के लिए कला का सहारा लिया है।

University Roll No. .....  Page No:.....

## चित्रकला :-

चित्रकला का अर्थ :-

मानव द्वारा अपने अर्तगत मे निहित भावो की अभिव्यक्ति के जिस माध्यम द्वारा फलक पर रेखाओ और रंगो की सहायता से आकर्षक रूप अभिव्यक्ति किया जाता है, उसे चित्रकला कहते है।

## शिक्षा के क्षेत्र मे चित्रकला का अर्थ

(i) चित्रो के माध्यम से कलात्मक प्रतिभा का विकास होता है।

(ii) चित्रकला के माध्यम से किसी (देशी) देश व समाज की संस्कृति एव सभ्यता के विकास का ज्ञान होता है।

(iii) किसी भी प्रकार का विज्ञापन चित्रकला से ही सम्भव हो पाता है।

(iv) मानचित्र चित्रो को देखने और बनाने से किसी भी देश का खान-पान, वेशभूषा जीवन स्तर आदि का ज्ञान होता है।

University Roll No. .....  Page No:.....

"Visual and Performing Art"

दृश्य कला का अर्थ :-

मानव मन के अन्तर्निहित भाव जब किसी माध्यम द्वारा अभिव्यक्ति पाकर सौन्दर्य के प्रति आकृष्ट होते हैं तो उसे कला कहते हैं कवि चित्रकार, मूर्तिकार, वास्तुकार व संगीत का इन कलाओं से निकट का नाता होता है। और निकट का अनुराग भी।

दृश्य कला :-

दृश्य कलाएँ वे कलाएँ हैं जिनका आनंद आखों द्वारा लिया जा सकता है जिन चीजों को देखकर, आनंद मिले वे दृश्य कलाएँ हैं। दृश्य कलाओं में निम्न विषयों को शामिल किया जाता है। चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, नृत्यकला, सबसे पहले हमें चित्रकला करने से पहले हमें चित्र तथा कला शब्दों के अर्थों को जानना होगा।

University Roll No. .....

Page No:.....

अपने भावो को अंग संचालन द्वारा प्रकट नृत्य कहलाता है। नृत्य का इतिहास उतना ही प्राचीन है। जितना ही मानव जाति का इतिहास, मानव द्वारा अपने भावो को अंग संचालन द्वारा प्रकट करने की प्रयास ने ही नृत्य को जन्म दिया।

ऋषि भरत ने तो इसे सब कलाओ मे सर्वश्रेष्ठ माना है। आज भी, इस का महत्व निर्विवाद भारतनट्यम, कात्थक, कुचीपुडि, ओडिसी भारत की प्रसिद्ध नृत्यकलाएँ है। कौन ऐसा आदमी जो एक अच्छे नाच के आगे अपना दिल खो न बैठे।

## मूर्ति कला

एक मूर्ति अपनी मूर्ति के माध्यम से अपनी भावों की इन्द्रधनुषी दुनिया को हमारे सामने उजागर करता है। जिस प्रकार एक जीवताकार अपने भावों को कविता की पंक्तियों में बिखेरता है, ठीक उसी प्रकार मूर्तिकार भी पुराने जमाने से लेकर आज तक अनेको मूर्तियां मूर्तिकला के माध्यम से उत्कृष्ट सौन्दर्य अभिव्यापक करती रही है।

मूर्तिकार, पत्थर, धातु, लकड़ी, मिट्टी आदि को कांट छांट कर अपनी विशिष्ट कल्पना के अनुरूप उसको आकार देता है।

## वास्तुकला :-

वास्तुकला गतिहीन कला के अन्तर्गत आती है; वास्तुकार ईट, लोहा, पत्थर, जैसी, शुष्क और कठोर वस्तु भी संगीत जैसी अमूर्त कला को प्रवाहित कर देते है। कुतुब मीनार, ताजमहल, लालकिला, सोमनाथ का मंदिर, बिरला मंदिर, कामेश्वरी का मंदिर आदि दक्षिण भारत की भव्य इमारते भारतीय वास्तु कला की श्रेष्ठता के जीवंत उदाहरण है। एक वास्तु विद्वी विशाल, सुंदर आकर्षक सुदृढ़ भवनाओ का निर्माण आदि करता है।

Expt. No.

Page No.
Date : 20

Drama :- नाटक कला का एक रूप है, जो व्यक्ति के तनाव एवं दुःख की खोज करती है। यह सामान्यतः कला का वह रूप है जिसमें दर्शकों के लीये एक कहानी का प्रस्तुतीकरण संवादों एवं शारिरिक क्रियाओं के मध्यम नाटक से किया जाता है। नाटक के दौरान कहानि का सम्प्रेषण थियेटर के विभिन्न अवयवो यथा अभिनय, पहनावा, दृश्यो, प्रकाश, संगीत, आवाज एवं संवाद के माध्यम से किया जाता है। नाटक एवं उसके द्वारा संप्रेषित संदेश का बौद्धिक एवं भावनात्मक प्रभाव नाटक के कलाकारो एवं दर्शको दोनो पर होता है। नाटक एक दर्पण के समान है जिससे हम अपनी छवि का मूल्यांकन कर सकता है, एवं मानव व्यवहार तथा भावनाओ को गहराई से समझ सकते है।

Definition of Drama:-

Acc. to Merrian Webster:- "Drama is a piece of writing that tells a story and is performed on a stage."

Acc. to English Dictionary:- "Any event or series of events having vivid, conflicting element that capture one's interest."

Expt. No.

Page No.
Date : 41

**Historical Background:-** हिन्दी साहित्य में नाटक का विकास आधुनिक युग में ही हुआ है। इससे पूर्व हिन्दी के जो नाटक मिलते हैं वे या तो नाटकीय काव्य हैं अथवा संस्कृत के अनुवाद मात्र क्योंकि उनमें नाट्य के तत्वो का सर्वथा अभाव हैं, जैसे नेवाज का 'शकुन्तला' कवि देव का 'देवमायाप्रपंच' आदि। रीवा नरेश विश्वनाथ सिंह का 'आनन्द रघुनन्दन' नाटक हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक माना जाता है। जो लगभग 1700 ई० में लिखा गया था, किन्तु, एक तो ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है, दूसरे वह रामलीला की पद्धति पर है। अतः वह भी आधुनिक नाट्यकला से सर्वथा दूर हैं। हिन्दी साहित्य के आदि और मध्ययुग से नाट्यकला का विकास न हो सका, जबकि हिन्दी लेखको को सम्मुख संस्कृत की नाट्यकला अत्यन्त विकसित और उन्नत अवस्था में विद्यमान थी। आधुनिक युग में हिन्दी नाटक का सम्पर्क अंग्रेजों से स्थापित हुआ। अंग्रेज लोग नाट्यकला और मनोरंजन में अत्यधिक रुचि रखते थे और साहित्य में नाटको की रचना भी प्रभूत मात्र हो चुकी हैं।

**Importance of Drama Education:-**

(i) **छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि:-** कक्षा में एक नयी भूमिका को स्वीकार करना एवं दर्शकों के सामने मंच पर एक पात्र विशेष की भूमिका अदा करना बच्चों को उनके सिखने और योग्यताओ पर विश्वास करने में मदद करता हैं।

Teacher's Signature

(ii) छात्रो की कल्पनाशीलता में वृद्धि :-

नाटक के काम में रचनात्मक विकल्पो की तलाश, नए विचारो को सोचना, परिचित वस्तुओ को नवीन तरीको से दर्शको के सामने रखने आदि क्रियाओ बच्चो की कल्पनाशीलता में वृद्धि करती है और जैसा कि आइंस्टीन ने कहा है "कल्पनाशीलता, ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है"।

(iii) समानुभूति का विकास :-

भिन्न-भिन्न परिस्थितियो में विभिन्न संस्कृति के कलाकारो के बीच अलग-अलग किरदारो को निभाते हुए बच्चो में दुसरो के दृष्टिकोण को समझने में है और उनके प्रति सहनशक्ति या सहनशील बनने में मदद करता है तथा इस प्रकार प्रकाशतर से उनकी सहानुभूति को बढ़ाता है।

(iv) एकाग्रता को बढ़ावा :-

नाट्यकला एक बड़े दर्शक समूह के सामने प्रस्तुत किया जाता है ऐसे में इसके पूर्वाभ्यास, प्रस्तुतीकरण सभी प्रतिभागियो से उच्च स्तर की एकाग्रता अपेक्षित होती है, यह एकाग्रता विचारो, शारीरिक क्रियाओ आदि सभी मरणो पर एक समान प्रभाव डालती है।

(v) संप्रेषण कौशल में वृद्धि :-

वाणी सभी के स्तर पर आवश्यकता होती है। एकाग्रता का यह अभ्यास बाद में जीवन में सभी स्तरो पर बालक की मदद करती है। सम्प्रेषण के माध्यम से ही नाटक को उचित प्रकार से दर्शको के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है।

(vi) खेल व मनोरंजन :-
नाटक बालकों के लिए खेल मस्ती एवं मनोरंजन का कार्य करता है। जो बच्चो की अभिप्रेरणा को बढ़ाता है तथा उनका तनाव कम करता है।

(vii) आरामदायी :-
कई नाट्य क्रियाऐ बच्चो को शारीरिक मानसिक एवं भावात्मक तनावो को अभिव्यक्ति करने एवं उत्पन्न तनावो को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

(viii) आत्मसम्मान को बढ़ावा :-
नाटक विचारो के क्रियाओं एवं क्रियाओ के प्रस्तुतिकरण के रूप मे प्रतिफलन है जो बच्चो को अभ्यास एवं धैर्य की कीमत बताती है। नाट्यकला एवं रचनात्मक गतिशीलता बच्चो के आत्मनियंत्रण को बढ़ावा देता है।

(ix) सामाजिक रूप से जागरूक बनना :-
नाटक की कथा, कहानी, कविताऐ, दंतकथाएं, खेल आदि बालक की विभिन्न सामाजिक उपयामों समस्याओ संस्कृतियो के बीच के द्वंद आदि के बारे में जागरूक बना देती है। जो बच्चो की सामाजिक, संस्कृतिक जागरूकता बढ़ाती है एवं उन्हें समझने में उनकी मदद करती है।

Expt. No.

Page No.
Date: 44

(x) सौन्दर्य बोध में वृद्धि :-

नाटक में भाग लेना और नाटक देखना दोनो ही क्रियाऐ बच्चो में आलोचनात्मक चिंतन एवं उनके सौंदर्य बोध को बढ़ाती है इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नाट्य शिक्षा बालक को सर्वांगिण विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

## Essential Element Of Drama :-

(i) शिक्षको से :-

प्रत्येक कक्षा अपने आप में अद्वितीय होती है जिसका नेतृत्व शिक्षक के हाथ में होता है न तो नाटक के लिए और न ही किसी दृश्य कलाओ के लिए कोई निश्चित कार्यक्रम प्रस्तावित है। अध्यापक से अपेक्षित है कि आप दिए गये उदाहरणों के आधार पर नवीन कार्य कलापो का सृजन करे और बच्चो की आयु, सामाजिक, आर्थिक स्थिति उनकी संस्कृति, उनकी रुचि के आधार पर नवीन क्रियाकलापो का चयन करे।

(ii) नाटक की गतिविधियो का उपयोग करे :-

नाटक का तात्पर्य सिर्फ उसका प्रदर्शन ही नहीं होता, बल्कि यह सतत् अभिवादन की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। नाटक और नाटक की विभिन्न गतिविधियो के इस्तेमाल कर भाषा सीखने में निश्चित लाभ तो मिलता ही है। साथ ही इससे बच्चो को मौका मिलता है कि वे सीमित भाषा के साथ

Expt. No.



के नाटकों से करें:-

छोटे - छोटे चरणों के साथ अपनी कक्षा में नाटक से बच्चों का परिचय कराएँ जो सरल हो। उदाहरण के लिए किसी दानव की नकल करो, अपने किसी रोल मॉडल कि नकल करो। नाटक सिखाने के क्रम में हो सकता है। कि आपको उन्हें छोटी सी चीजे जैसे अपने हाथो को फैलाना, छोटे और बड़े कदम लेना, अपने भावों को प्रदर्शित करने के लिए अपने चेहरे और पूरे शरीर का इस्तेमाल करना, विभिन्न मुख मुद्राएँ और विभिन्न भाव - भंगिमाएँ आदि भी सिखनी पड़ सकती हैं।

(vi) बालकों की रूचि का विशेष ध्यान रखे :-

सभी बच्चे नाटक के सभी क्रियाकलापो में न तो अच्छे हो सकते हैं और न ही उनमें उनकी रूचि हो सकती है ऐसे में यह आवश्यकता है कि आप उनकी रूचि एवं उनकी एक विशेष भूमिका के लिए उनकी योग्यता का ध्यान अवश्य रखे। जैसे हो सकता है कि किसी बच्चे की अभिनय में रूचि न हो पर उसका मँच का सँचालन कौशल आपके मंच की साज - सज्जा का कौशल अच्छा हो, ऐसे में आप उसे कोई अन्य कार्य देने की बजाए अच्छा हो यदि उसकी रूचि का कार्य उसे सौंपें एवं उस कार्य विशेष में अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका दें।

(vii) बहुविषयी सामग्री का चयन करें :-

नाटक को इस्तेमाल करते समय आपके लक्ष्य बहुविषयी होना चाहिए। आप अन्य विषयो से दिए गए तथ्यों एवं संकल्पनाओं को अपने नाटक में

सम्मिलित कर सकते हैं जो आपके नाटक को और प्रभावी बना देगा जैसे बच्चों को विभिन्न ऐतिहासिक दृश्यों का अभिनय करने सकते हैं, किसी संस्कृति विशेष के पहनावे और विभिन्न रीति रिवाजों की नकल कर सकते हैं।

## (viii) नाटक की गति एवं उसके छात्र केन्द्रित होने का ध्यान रखें:-

नाटक कक्षा की गति छात्रों की मनोदशा में बदलाव ला सकता है। नाटकीकरण विद्यार्थी केन्द्रित होना चाहिए ताकि आप उसका इस्तेमाल अपने पाठ के शिक्षक केन्द्रित भागों से अंतरसम्बन्ध स्थापित करने के लिए कर सकें। यह एक सक्रिय गतिविधि है इसलिये आप इसका उपयोग रीतिपूर्वक किये जाने वाले वैयक्तिक कार्य के बाद कक्षा को अधिक जीवंत बनाने के लिए कर सकते हैं।

## (ix) उपयुक्त विषयों एवं गतिविधियों का चयन करें:-

शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को उन्नत बनाने के नाटक हेतु उपयुक्त विषय एवं गतिविधि चुनें। जब आप किसी नाटक सम्बंधी गतिविधि की योजना बनाते हैं तो आपको अपना लक्ष्य पता होना चाहिए। कुछ गतिविधियाँ सक्रियता और प्रभाव पैदा करने वाले कामों के लिए हो सकती हैं और कुछ भाषायी कौशल का अभ्यास करने के लिए। आपका लक्ष्य पिछले पाठ को दोहराना या उसका अभ्यास कराना भी हो सकता है या फिर आपका लक्ष्य पाठ की गति को बदलना हो सकता है. उद्देश्यों से तारतम्यता रखने वाली गतिविधियों को चुनें।

Expt. No.

Page No.
Date : 48

## (x) कक्षा को व्यवस्थित करें :-

नाटक एवं उसके पूर्णभ्यास के दौरान कक्षा को उसके अनुरूप व्यवस्थित करना न भूलें। स्थान को बाधा मुक्त रखें। यदि कुर्सीयों, मेजों को हटाने की जरूरत हो तो बेशक उन्हें या तो कक्षा में एक किनारे कर दें या बाहर कर दें। प्रदर्शन कला की अधिकांश गतिविधियाँ बच्चे खड़े रहकर करते हैं और आमतौर पर कक्षा की सामने वाली जगह पर्याप्त होती है। यदि बच्चे गोले में खड़े हो या समूह में काम कर रहे हो तो आपको ज्यादा जगह की जरूरत होगी। टेबल और कुर्सियों को कक्षा के एक कोने में सरका दें और फिर या तो बच्चों के लिए किसी स्कूल को ऑडिटोरियम या कॉमन हॉल में उपयुक्त व्यवस्था करें।

Teacher's Signature

Expt. No.

Page No.
Date : 49

# रानी लक्ष्मी बाई

## (पहला दृश्य)

**नाटक के पात्र :-** नाना साहब
मनुबाई
मोरोपंत
चंपा
सुंदर
राव साहब

(एक सजा हुआ हाथी खड़ा है। उस पर दो बालक बैठे हुए हैं। एक का नाम पेशवा नाना साहब और दूसरे का राव साहब है। सड़क के किनारे एक नटखट बालिका अपनी पिता की उँगली पकड़े खड़ी है और हाथी की ओर देख रही है।)

**नाना साहब :-**
ओ छबीली। हम हाथी पर चढ़कर जा रहे हैं।

**मनुबाई :-**
जरा ठहरो मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी। मुझे भी हाथी पर बैठाकर साथ ले चलो।

**नाना साहब :-**
(हँसकर) हम तुझे साथ नहीं ले जाएँगे।

**मनुबाई :-** तुम साथ नहीं ले जाओगे तो मैं दूसरे हाथी पर चढ़कर आ जाऊँगी।

Teacher's Signature

नाना साहब :- आ जाना। (हाथी झूमता हुआ चला जाता है)

मनुबाई :- पिता जी, हम भी हाथी पर चढ़ेंगे।

मोरोपंत :- बेटी मनु ! हमारे पास हाथी कहाँ है?

मनुबाई :- नहीं, मुझे ये सब नहीं सुनना। बस हमें भी हाथी पर चढ़ाओ (मचलती है)

मोरोपंत :- मनु हमारे भाग्य में हाथी कहाँ? जिद न कर।

मनुबाई :- (रौब से) आपको क्या मालूम, मेरे भाग्य में तो हाथियों की सवारी लिखी है।

मोरोपंत :- ईश्वर तेरे भाग्य को चार चाँद लगाए और तू दस नहीं, बीसियों हाथियों की स्वामिनी बने।

मनुबाई :- (मुस्कुराकर) आप देखेंगे, एक दिन ऐसा आएगा, जब मेरे पास बीसियों हाथियों होंगे, नौकर-चाकर होंगे और खूब सारा धन होगा।

मोरोपंत :- अब बहुत बातें मत बना। चल घर चलें। (दोनों घर की ओर चल देते हैं।

(दूसरा दृश्य)

(एक महल के आँगन में 8 से 10 वर्ष के बच्चे गुड़िया और गुड्डे का खेल खेल रहे हैं। बच्चों के दो दल बन गए हैं। एक दल कन्या पक्ष बनता है और दूसरा दल वर पक्ष। गुड्डे-गुड़िया का विवाह जो करना है। वहीं पास से मनुबाई जा रही है)

चंपा :- मनु ! इधर आना ।

मनुबाई :- कहो क्या कहना चाहती हो?

चंपा :- हम गुड्डे - गुड़ियो का विवाह करेंगे, बाजे बजेंगे, प्रतिभोज होगा। बताओ, तुम किस ओर शामिल होना चाहोगी?

मनुबाई :- मैं किसी ओर भी शामिल नहीं होऊँगी मुझे कहीं जाना है।

चंपा :- कहाँ ?

मनुबाई :- क्या तुम देख नहीं रही, मेरे हाथ में तलवार है ? मैं आजकल नाना साहब के साथ तलवार चलाना सीख रही हूँ।

चंपा :- अरी, लड़की होकर तुम यह क्या कर रही हो ?

मनुबाई :- ओ भोली चंपा। तुझे क्या मालूम कि पुरुषो की तरह स्त्रियों को भी शत्रुओ से देश की रक्षा करनी सीखनी चाहिए। इसीलिए मैं अस्त्र - शस्त्र चलाना सीख रही हूँ।

सुंदर :- तो क्या तुम शत्रु के साथ लड़ेगी ?

मनुबाई :- लड़ूँगी ही नहीं, उसे शत्रुता करने का मजा भी अवश्य दूँगी, देखना, एक दिन सारे शत्रु सिर पर पैर रखकर भाग जाएँगे।

सुंदर :- अरे। तू तो बड़ी बहादुरी की बाते करती है।

मनुबाई :- तो क्या तूमने मुझे यूँ ही समझ रखा है? मैं तो हूँ ही बहादुर।
चपा :- तब तुम जाओ, तुम्हारे - हमारे रास्ते अलग - अलग हैं।

मनुबाई :- जा रही हूँ और कहे देती हूँ कि यदि तुम भी अस्त्र - शास्त्र चलाना सीख लोगी तो अच्छा रहेगा।
(मनुबाई तेजी से तलवार घुमाती हुई प्रसन्न मुद्रा में चली जाती है।)

## तीसरा दृश्य

(युद्ध का मैदान एक ओर अंग्रेज लेफ्टिनेंट व सेना की टुकड़ी और दूसरी ओर रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहिब और कुछ अन्य योद्धा दिखाई देते हैं।)

सूत्रधार :- हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
इनका गाया छोड़ चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मैदानों में।

लक्ष्मीबाई :- नाना साहब! आप सेना को लेकर बाईं ओर से शत्रुओं पर आक्रमण कीजिए।

नाना साहब :- तुम कहाँ रहोगी?

लक्ष्मीबाई :- आप मेरी चिंता मत करो। जाओ शत्रुओं पर टूट पड़ो।

नाना साहब :- आज शत्रु सावधान हैं, तुम भी सजग रहना, मैं चलता हूँ।

(प्रस्थान)

लक्ष्मीबाई :- राव साहब! आप दाईं ओर से शत्रुओं को घेर लो, किसी शत्रु को जीवित मत छोड़ना।
राव साहब :- आज ऐसा ही होगा। आप चिंता न करें, महारानी!

(प्रस्थान)

सुंदर:- मेरे लिए क्या आदेश है?

लक्ष्मीबाई:- आज तुम दामोदर राव की रक्षा करना और देखना, मेरे शरीर को कोई हाथ न लगा सके। मैं चलती हूँ।

(प्रस्थान)

पर्दे के पीछे से तलवारों की कट-कट की आवाज ... हाय ... मरा. ... आह। यह रानी है या मौत। पानी! पानी! पानी! आह... आह... अरे कोई है? बचाओ!

तुम्हारी करनी का परिणाम है कायर।

(मंच पर मुँह में लगाम और दोनो हाथों में तलवारे लिये खुन से लथपथ रानी का आगमन)

लक्ष्मीबाई:- सुंदर! मेरा कर्तव्य पूर्ण हुआ। आज से तुम दामोदर राव की रक्षा करना...। चलती हूँ अब मुझे संभालो। आओ, जल्दी आओ,

सुंदर:- महारानी, आपकी यह हालत!

लक्ष्मीबाई:- मेरी प्यारी सखी, इसे ही वीरगति कहते हैं। यह बड़े भाग्य से मिलती है। (मेरी यह बात याद रखना)

(हाथों से तलवार गिरती हैं।)

सुंदर:- (आगे बढ़कर रानी को अपने हाथो में सँभालती हुई), घबराओ मत, मैं आपके शरीर को किसी शत्रु को छुने नहीं दूँगी।

लक्ष्मीबाई:- मातृ-तृ-भू-ऊ-मी की जय (परदे के पीछे से आवाज आती हैं)

"जाओ रानी याद रखेंगें हम ये आपका बलिदान। आपका यह बलिदान जगाएगा स्वतंत्रता अविनाशी, तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिर निशानी थी खूब लड़ी मरदानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

(परदा गीरता है)

शिक्षा :-

इस नाटक से हमें यह शिक्षा मिलती है कि केवल पुरुष ही देश की रक्षा नहीं कर सकते अपितु नारी भी देश की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहती है। रानी लक्ष्मीबाई इस बात का सबूत है। वो नारी जाति के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनकी हिम्मत और साहस से नारी को यह प्रेरणा मिलती है कि देश की सुरक्षा का भार केवल मर्दों के कंधो तक सीमित नहीं है नारी जाति को भी अपने हिम्मत, साहस और धैर्य पर विश्वास होना चाहिए तथा नारी को भी देश की रक्षा के हर कदम पर हिम्मत और साहस दिखाना चाहिए।

# Still Life Study

Still life is a ward of art depicting many mats Subjects matter which may be natural or man- made with origin in middle ages still-life painting emerged as a profession specialisation in western painting.

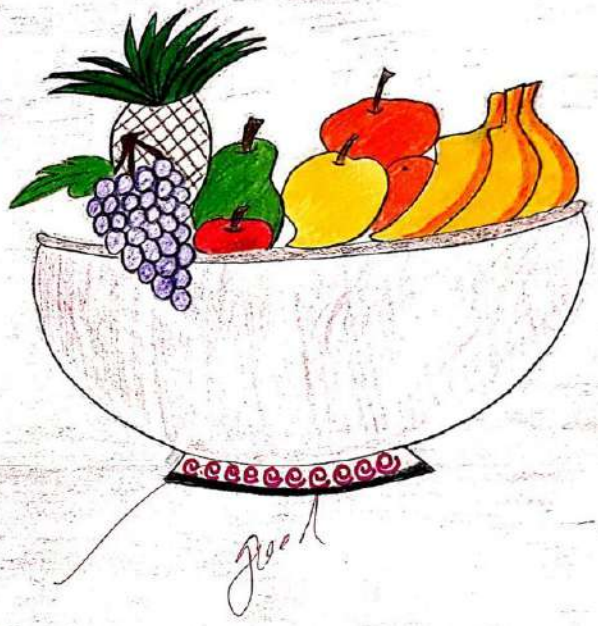

# Composition Drawing

The Composition of a picture is different from its Subject which what is shown whether a moment from story a person or a place. The term Composition means "putting together" and can apply to any work from music to writting to paragraphy.

# Arrangement Painting With Leaf

- choose leaves that are still fresh and pliable.
- lay newspapers down to protect your work.
- Select a paper from your leaf print.
- Paint a surface of leaf with paint
- Flip the leaf paint side down onto the paper.
- Peel the leaf from paper and have a printed image of leaf.
- Let the paint work dry.

# Monotype Painting With Vegetable

This is one of the interesting ways to make amazing painting. This process we will using a lady fingers in inner surface to give its impressions and fill the drawing. This process is very simple. Take a drawing sheet and make a drawing using lady finger.

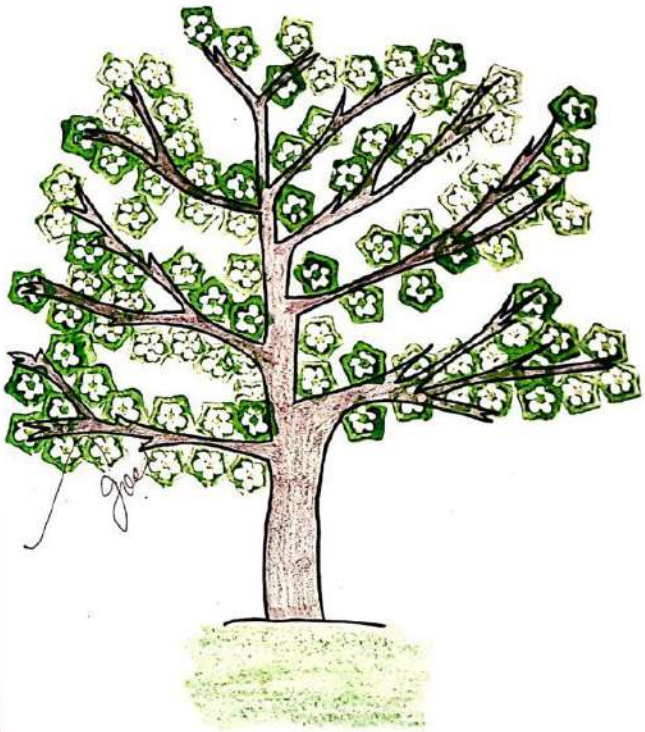

# Geometrical Design

It is the branch of Computational Geometry. It deals with the Construction of free from Curves and is related to geometrical modelling. Geometrical design study the Construction of surfaces given by set of points using polynomial or piecewise rational Method.

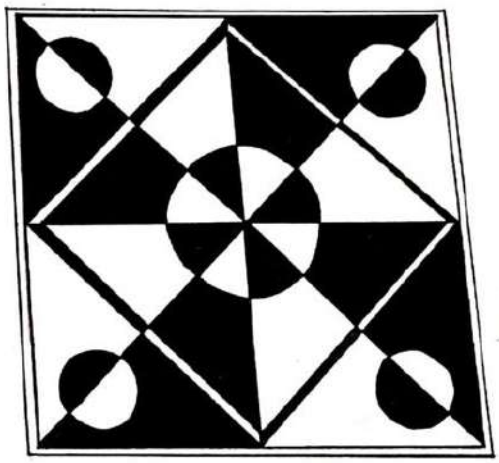

# Surface Design

## Rangoli

Rangoli is an art native to Nepal, Bangladesh, India in which patterns are created on floor. Using Material such as Dry flour, Coloured Sand or flower petals. It is usely made during festivals are passed from one generation to next keeping both the art form and tradition alive. The purpose of Rangoli is decoration, and it is thought to bring good luck.

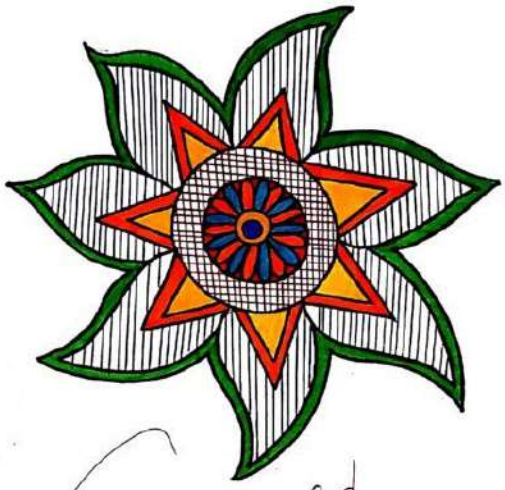

good

# Poster Design

Whenever you are creating a poster for an internal event. The purpose of the poster is....

* To inform readers about the event
* To encourage readers to participate
* Create a Hierarchy of information
* Grab readers attention with a beautiful design.

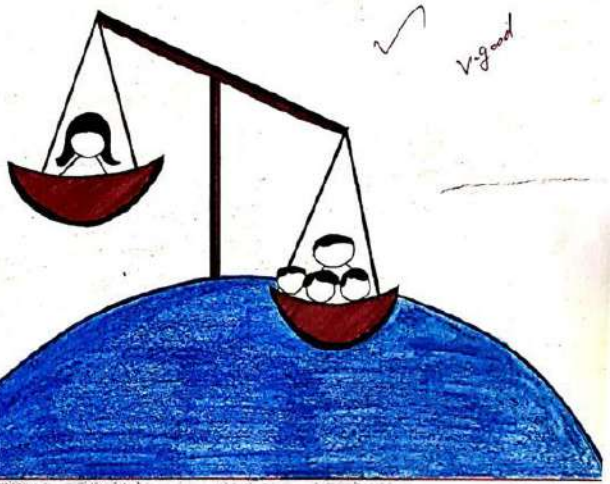

# Collection of Rare Photographs

The process of ranging a new paintings or Collecting of family photos can Seen like a puzzle as with every aspect of decorating. It helps to Understand the basic principle first, then in provide the most pleasing arrangements may be the one you least aspect.

# Representational Drawing and Painting from Nature – flowers

Flower drawings are most often experiments in line and coloured.

Artists will work with Pen and ink or water colour when delving into the genre.

It is upto the artists to decide.... How best he can create a base, drawing to be true to their vision.

Rose

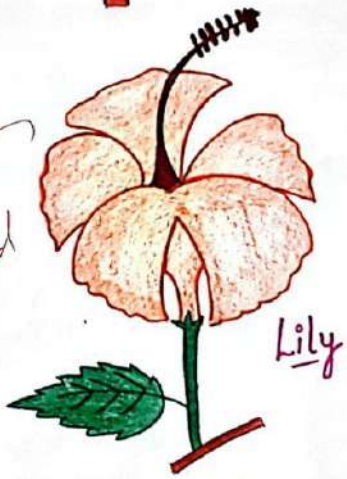

Lily

# Composition In Imagined Situation

Imagination, is the creative ability to form images, ideas and sensation in the mind without direct input, from the senses such as seeing or hearing imagination helps mate knowledge applicable. In solving problems and is the learning process. The term is technically used in psychology from process of receiving in mind.